पावागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे,
आगे आगे कालो खेले,
पाछे भेरू गोरो हे ओ जी।।

ऐ हे खड़क खांडो खप्पर हाते,
हुई विकराल काली हे,
योगी भूत पिचासन नाचे,
हे तीन लोक की माई हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे।।

ऐ हे तीन लोक और चौदह भवन में,
माता थारो राज हे,
देवी देवता सरणे आया,
शंकर शीश नमाया हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे।।

ऐ हे ढोल नंगाड़ा नोपत बाज्या,
तीनो देव थारे नाच्या हे,
भगता रे बेले आवो ऐ कालका,
अब देरी ना लगावो हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,

संग भेरू ने लाइ रे।।

ऐ हे धरम भगत थारी महिमा गावे,
चरना शीश नमावे हे,
जो कोई चरना आवे मात रे,
जनम सफल हो जावे हे ओ जी,
पांवागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे।।

पावागढ़ सु उत्तरी कालका,
संग भेरू ने लाइ रे,
आगे आगे कालो खेले,
पाछे भेरू गोरो हे ओ जी।।

गायक और लेखक धर्मेंद्र तंवर उदयपुर।
mobile no 9829202569

Source: https://www.bharattemples.com/pawagadh-su-utari-kalka-bhajan/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw